से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ।

(ग) शेरे ने जरा रूककर, घबराकर कहा - "नहीं - शाहनी। ... "शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिंतित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर ... "शाहनी कहते-कहते रुक गई। आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है।

अथवा

मनुष्य समझा रहा है - हम आप लोगों को हाथों हाथ लेंगे। अपने घर, मकान, झोपड़ों में रखेंगे, बस्तियों में बसाएंगे, कहीं भी जाएंगे तो आपको अपने साथ ले जाएंगे ... यहाँ न आप लोगों को दूसरे के आगे तनकर खड़ा होने का अधिकार है और न किसी को खड़ा होने के लिए एक बीते से ज्यादा जमीन दी गई है।

29 Dec

Maitreyi College LIBRARY Chanakya Puri, New Delhi-110021

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 4520

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A.(H) Hindi - CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. 'उसने कहा था' कहानी में निहित मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'छोटा जादूगर' कहानी की समीक्षा कीजिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए। (12)

munotes.in

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र - चित्रण कीजिए।

3. 'वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'माया का मर्म' कहानी व्यक्ति की सूक्ष्म संवेदना व्यक्त करती है - इस कथन पर विचार कीजिए।

4. 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार लिखिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (9×3=27)

(क) सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहत पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नयी स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झटपट उठा और छतरी के बाहर आकर भोंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुभकारकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया हार कर चारों तरफ

दौड़-दौड़ कर भोंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ पड़ता। कर्त्तव्य हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

अथवा

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भरी दुर्घटना मालूम होती थी।

(ख) गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर घर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रह कर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे।

अथवा

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ

munotes.in